स्वीडिश जनतंत्र और एक यूरोपीय विश्वविद्यालय

प्रो. दीपक मलिक

उत्तरी यूरोप में एक ऐसा विश्वविद्यालय जहां वरिष्ठ प्राध्यापकों से लेकर विद्यार्थी तक सायकिल पर सवार मिल जायेंगे। 38000 विद्यार्थियों के इस विश्वविद्यालय के कुलपति भी रिमझिम बरसात में छाता लेकर पत्थर की गलियों से रेक्टर दफ्तर की ओर खरामा-खरामा अकेले ही जाते दिख जायं तो आश्चर्य नहीं । प्राचीन नार्डिक इलाके के इतिहासकार प्रोफेसर से इतिहास की कक्षा में स्वीडिश नायकों की अनन्त कथाओं को सुनने के बाद अचानक यदि शाम को मंच पर 'रेड आर्केस्ट्रा' में एक सुरीली बांसुरी या क्लेरियोनेट बजाते हुए वह प्रोफेसर दिख जायं तो फिर आश्चर्य नहीं। यहां विश्वविद्यालय भी खुले जनतंत्र की मुक्त हवा में चलते हैं, अध्यापक, विद्यार्थी और प्रशासन के बीच न तो कोई दीवार है और न ही कोई व्यवधान। स्कैन्डिनेवियाई आसमान के नीचे मुक्त हवा में जने वाले इस विश्वविद्यालय में स्वाभाविक रूप से एक स्वस्थ वातावरण पलता है-जो खास तौर पर सामाजिक विज्ञान के पूरे शास्त्र को बेहद प्रभावित करता है इसीलिए आज भी इस विश्वविद्यालय में बाजार से कहीं ज्यादा रुचि अध्यापकों और अध्येताओं का 'लोक कल्याणकारी राज्य' में है। समाजशास्त्र विभाग में 'लोक कल्याणकारी राज्य' पर एक अलग अध्ययन इकाई है और उसके कर्ताधर्ता एक मशहूर अमेरिकी समाजशास्त्री हैं जिन्होंने अमेरिका में व्याप्त नव पूंजीवाद और लोक कल्याणकारी राज्य के खिलाफ फ्रीडमैनीय विचारधारा का विरोध करते हुए अमेरिकी नागरिकता छोड़ दी और स्वीडिश नागरिकता ले ली और अब वह यहीं पढ़ाती है। दक्षिण एशिया से सम्भवत: सबसे मशहूर अध्यापिका बंगलादेश की आलिया अहमद हैं जो अर्थशास्त्र विभाग में तीसरी दुनिया में होने वाले 'गरीबी अध्ययन' की विशेषज्ञ मानी जाती हैं। अभी हाल ही में दक्षिण एशियाई अध्ययनपीठ की भी स्थापना की गई है जिसे मुख्यत: प्रसिद्ध स्वीडिश समाजशास्त्री स्टीफन लिंडबर्ग और युवा प्रोफेसर इयान हगनूसन चलाते हैं। यूरोप के इस पुराने लुण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1666 में हुई थी। इस विश्वविद्यालय की स्थापना धर्मयाजकों को प्रशिक्षण देने के लिए की गई थी। खैर यह बात तो खत्म हो गई। 1666 के बाद जब डेनमार्क से सम्प्रति स्वतंत्र हुए स्कानिया सूबे के इस शहर 'लुण्ड' में लुण्ड विश्वविद्यालय को जब एक धर्मनिरपेक्ष विश्वविद्यालय में परिवर्तित किया गया तो इसका मुख्य उद्देश्य इस इलाके का 'स्वीडिशीकरण' था। बहरहाल इस इलाके को चुना इसलिए गया कि यहां आर्चविशप का निवास था और इस मायने में यह मध्ययुगीन स्कैंडिनेविया का आध्यात्मिक केन्द्र था।

60 के दशक से जब यूरोप में वामपंथ की हवा चली तो लुण्ड विश्वविद्यालय भी बाएं मुड़ गया पर इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि 20वीं सदी के स्वीडेन में जब से संसदीय जनतंत्र आया उसमें लगाग 80 प्रतिशत समय मे वामपंथी यानी की सोशलिस्ट और मार्क्सवादी पार्टियां तथा अन्य वामपंथी ही शासन पर हावी रहे हैं। स्वीडेन अभी तक विश्व के संभवत: सबसे 'विकसित लोक कल्याणकारी' राज्य के रूप मे खड़ा हुआ है। नवपूंजीवाद, नवउदारवाद की हवा स्वीडेन को अभी तक अपनी बुनियाद से नहीं हटा पाई है यह मुल्क अभी भी या तो सोशलिस्ट या मार्क्सवादियों या पर्यावरणवादियों के खाते में ही अपना बहुमत का वोट डालता आया है। आखिर इसका कारण क्या है, इसका कारण है 'स्वीडिश माडल ऑफ सोशल डेमोक्रेसी' और 'नार्डिक माडल आफ वेलफेयर स्टेट' वैश्वीकरण के इस बेहद आक्रामक दौर में भी स्वीडेन ने अपने लोककल्याणकारी राज्य में न्यूनतम परिवर्तन किये है। सम्भवत: स्वीडेन अकेला देश है जहां दक्षिणपंथी हुकूमत के छोटे से कालखण्ड में स्वीडिश अर्थतंत्र अपने बुनियाद से लड़खड़ा गया और उसे पुन: स्थिरता और उत्पादकता में वृद्धि का मौका तब मिला जब वे पुन: सोशलिस्ट-मार्क्सवादी पार्टियों की ओर लौटे। इस मायने में स्वीडेन उन देशों के लिए अधिक सार्थक माडल बन सकता है जो तीसरी दुनिया में प्रगतिशील रास्ता तलाश रहे हैं।

लुण्ड विश्वविद्यालय में एक बड़े अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन की समाप्ति के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम के तौर पर स्वीडिश लोक नृत्य का आयोजन किया गया था मैने सोचा था कि कुछ आसपास के युवक युवतियां कानिया सूबे के लोकनृत्य दिखा जाएंगे। पर ज्यों लोकनर्तकों की टोली आई उनकी उम्र देखकर मैं हैरान रह गया, लगभग सभी नर्तकों की उम्र 60 से 70 के बीच थी पूरे 15 की टोली में केवल 2 नर्तक 55 की आसपास के उम्र के लगे।

मैंने अपने पास बैठे सिंहली प्रोफेसर से कहा कि यह 'लोक कल्याणकारी राज्य' का ही कमाल है जहां 65-70 की उम्र तक नर्तकों की टोली अपनी करतब दिखलाती रहती है। किसी भी अन्य समाज में यह सम्भव नहीं, क्योंकि इस उम्र तक आदमी थक चुकता है और उसे अपने बीमारियों और जीवन को किसी तरह

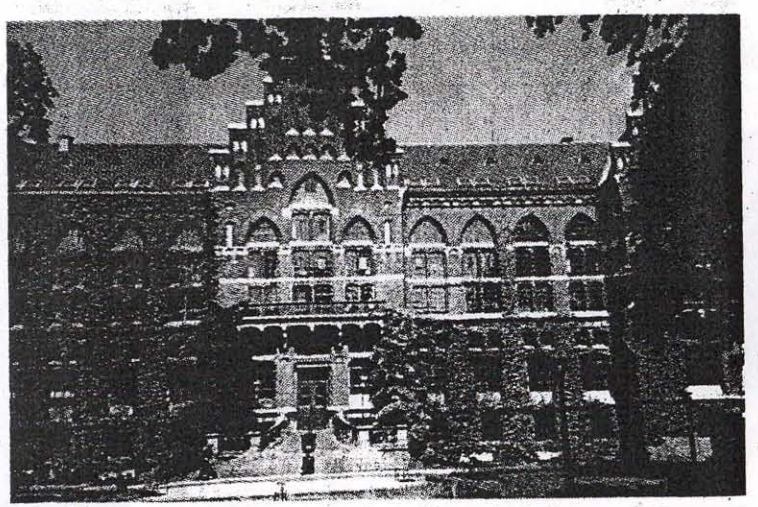

खींचतान कर आगे ले चलने की चिंता लगातार सताती रहती है। वस्तुत: लोककल्याणकारी राज्य और उसका अर्थशास्त्र वामपक्षीय राजनैतिक गठबन्धनों के परिणाम स्वरूप ही बनता है। स्वीडेन जैसे देशों में लाल-हरे गठबंधन जिसमें शहरी वामपक्षीय मजदूर आंदोलन, बेरोजगारी विरोधी आंदोलन और ग्रामीण किसानों को सब्सिडी, लाभकारी मूल्य की नीति स्वीडिश समाजवाद या लोककल्याणकारी राज्य की धुरी बनी। आमतौर पर यूरोप के दूसरे देशों में शहरी मध्यमवर्ग, मजदूरवर्ग और किसानों की एकता अधूरी रह गई जिसकी वजह से स्वीडिश पैमाने का लोककल्याणकारी राज्य नहीं बन पाया।

वस्तुत: स्वीडिश लोककल्याणकारी राज्य और समाजवाद की नींव रखने में स्वीडिश मध्यमवर्ग ने भी बड़ी मदद की। भारत जैसे देश में जहां जनतंत्र का परीक्षण सम्भवत:पूरे तीसरे विश्व में सबसे अधिक सफल रहा पर राजनैतिक जनतंत्रीकरण और सामाजिक परिवेश अभी भी एक अर्द्ध और कभी-कभी पूर्ण सामन्ती परम्परा पर टिका हुआ है इसलिए यहां पर मध्यमवर्ग मजदूर वर्ग और किसानों के बीच एक राजनैतिक गठबंधन नहीं बन पाया है। एक हद तक आजादी के संघर्ष में यह गठबंधन बना था पर कालान्तर में टूट गया। समाज सुधार के अभाव में समाज के अंदर आजादी और परिवर्तन का ढांचा कमजोर रहता है हालांकि संसदीय जनतंत्र जैसे मंच जो राजनैतिक पार्टियों के मंच होते हैं उसकी सफलता के लिए वाहवाही भारत अवश्य ले सकता है।

स्वीडेन में वामपक्षीय दल सन् 20 से ही सत्ता पर काबिज हैं और पूरी एक शताब्दी पार हो गई है एक छोटा सा व्यवधान जरूर बीच में आया था। सन् 76 में एक दक्षिणपंथी गठबंधन ने चुनाव ज़ीता था उस समय थोवोर्न फलादीन के नेतृत्व में सेंटर पार्टी सहित अन्य गैर वामपंथी दलों ने सरकार बनाई थी पर 4 साल बीतते-बीतते उस सरकार ने स्वीडेन को घाटे के अर्थशास्त्र और बेरोजगारी की ओर ढकेल दिया इसीलिए दक्षिणपंथी दल स्वीडिश राजनैतिक परिदृश्य में पूरी तरह खारिज हो चुके हैं। पिछले चुनाव में, वर्तमान संसद में 45.3 प्रतिशत महिलाएं हैं, वस्तुत: यह स्वीडिश समाजवाद और लोकतंत्र की एक विशिष्ट उपलब्धि हैं, पर यह तभी सम्भव हो पाया है जब समाजवादी, मार्क्सवादी और ग्रीन गठबंधन ने लोककल्याणकारी राज्य के एक प्रमुख खम्भे के रूप में महिलाओं को चुना और वामपक्षीय आंदोलन ने स्त्री विमर्श और पर्यावरण रक्षण को अपना प्रमुख एजेण्डा बनाया।

स्वीडिश राजनैतिक व्यवस्था में वामपक्षी रुझान के साथ ही समानता और सामाजिक आधुनिकीकरण के नये आयाम भी जुड़ते हैं, इसीलिए मौजूदा संसद में वामपक्ष का वर्चस्व कायम है। दरअसल स्वीडेन में दक्षिणपन्थी पार्टियों और विचारधारा ने भी 'लोक कल्याणकारी राज्य के लिए आम सहमति' के सामने घुटने टेक दिए हैं जिसे सोशल डेमोक्रेट्स और वामपंथियों ने मिल जुलकर पिछले 74 साल में बनाया है। पुख्ता तौर पर यूरोप और सम्भवत: विश्व के सबसे सफल इस लोक कल्याणकारी राज्य की बुनियाद सन् 30 में डाली गई थी। यही वजह है कि आज स्वीडेन में वामपंथ और दक्षिणपंथ के बीच खाई काफी कम हुई है पर यह कमी इसलिए हुई है चूंकि स्वीडिश दक्षिणपंथ ने स्वीडिश सोशल डेमोक्रेट और वामपंथियों के विचारधारा के सम्मुख हार मान ली हैं और आज वह 'आयातित दक्षिणपंथ' जो अट्लांन्तिक पार अमेरिका से आता है, उसकी पनाह छोड़कर राष्ट्रीय पैमाने पर 'सोशल डेमोक्रेट और वामपक्ष द्वारा बनायी हुई आमसहमति' में अपनी जगह की तलाश कर रही है। राजनीति का आधुनिकीकरण की एक अकेली प्रक्रिया हो ही नहीं सकती है जब तक कि व्यापक रूप से नागरिक समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रियाएं मजबूत नहीं हों।

स्वीडिश जिन्दगी में धर्म से लेकर स्थापत्य और संगीत कला सभी में व्यापक आधुनिकीकरण का प्रभाव स्पष्टत: दिखलाई पड़ता है। 20वीं सदी का आधा हिस्सा स्वीडिश गद्य साहित्य में सर्वहारोन्मुख लेखन का है जिसमें स्वाभाविक रूप से वामपक्षीय लेखक हावी रहे, बाद के दिनों में स्टीनवर्ग जैसे साहित्यकार आये जिन्होंने साहित्य के उन्मुक्त द्वार से समाज को परिचित कराया। 60 के ही दशक से प्रयोगधर्मी और अपनी पारदर्शिता के लिए मशहूर फिल्म निर्देशक इन्गमार बर्गमैन ने अभी-अभी 2003 में टेलीविजन के लिए कुछ फिल्में बनाई हैं जो उनके 60 के 'खुले दौर' की फिल्मों के नये संस्करण हैं।

वस्तुत: स्वीडिश आधुनिकीकरण की प्रक्रिया उपर से लादी नहीं गई है उसमें जहां एक ओर अर्द्धमिथकीय रुझान वाले इमानुयेल स्वीडेनवोर्ग जैसे लेखकों में दिखलाई पड़ता है तो साथ ही स्वीडिश आधुनिकीकरण की निचले सतह में एक ग्रामीण, प्रकृति -उन्मुख मासूम और विनयी सतंह भी दिखलाई पड़ती है। दूसरी ओर माइकेल बेलमैन सरीखे लेखकों द्वारा 'जीवन में जयगान' का साहित्य भी दिखलाई पड़ता है। आधुनिकता लेकिन अपने देशी परिवेश में, स्वीडिश समाज को एक खास स्थिरता देती है।

स्वीडिश जीवन दर्शन ने महज मुनाफेबाजी और समृद्धि को अपना धर्म नहीं बनाया है, उनका अगर कोई व्यावहारिक धर्म है तो वह है 'लोककल्याणकारी राज्य' यही कारण है कि जिस समय भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन, जो हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और दर्शन दोनों के संयुक्त प्रोफेसर रहे हैं, को नोबेल पुरस्कार की घोषणा हुई तो स्वीडिश बुद्धिजीवी समाज ने बेहत संतोष जताया और अखबारों पत्रिकाओं ने भी खूब लिखा। भारत में अमर्त्य सेन में रुचि केवल उनके भारतीय नस्ल के एक विद्वान होने के नाते थी प्रकृति की खुली हवा, लोक कल्याणकारी राज्य और समृद्धि के पायदान पर खड़े स्वीडिश समाज ने यह मान लिया था कि वे बाकी 'रहती दुनिया' के दु:ख दर्दों से वह अलग हैं पर इस सपने पर वज्राघात तब हुआ जब स्वीडेन के सबसे मशहूर प्रधानमंत्री ओल्फ पाम की हत्या स्टाकहोम के सड़कों पर कर दी गई।

स्वीडिश मानते थे कि ऐसी घटना उनके इस परियों वाले देश में हो ही नहीं सकती है पर इतिहास की क्रूर छाया किसी को छोड़ती नहीं। ओल्फ पाम का गहरा रिश्ता भारत से भी था क्योंकि वे शीतयुद्ध के दिनों में अमेरिकी वर्चस्व के खिलाफ मुखर थे। यूरोप में वे अकेले राजनेता थे जिनकी इज्जत विश्व पैमाने पर शांतिदूत और तीसरी दुनिया के जबर्दस्त हमदर्द के रूप में की जाती थी। ओल्फ पाम का एक रिश्ता और भी था। भारतीय मूल के रजनी पाम दत्त जो ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के लगभग 30 वर्षों तक अध्यक्ष और महामंत्री रहे जिनकी पुस्तक ने तीसरी दुनिया के आजादी के सिपाहियों को साम्राज्यवाद को एक खास नजरिये से देखने की प्रेरणा दी, जिनके बहुत सारे प्रशंसकों में एक भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी थे, वे ओल्फ पाम के दूर के रिश्तेदार भी थे।

ओल्फ पाम की जिस सिनेमा हाल के पास हत्या हुई उसे मैने देखा और साथ ही पुराने स्टाक होम की गली में उनके मकान को भी देखा जहां से वे पैदल ही संसद भवन चले जाया करते थे, चूंकि संसद भवन दूर नहीं था, पर हत्या की उस मनहूस रात में वे अपनी पत्नी के साथ जब रवाना हुए तो उन्होंने सरकारी कार न लेकर शहर के पब्लिक ट्रान्सपोर्ट के तहत भीड़ से लदे मेट्रो से सिनेमाहाल की दूरी तय की और आते वक्त पत्नी से कहा कि वे मेट्रो से न जाकर पैदल ही घर लौटेंगे पर वे घर लौट नहीं पाए आततायी के हाथों शहीद हो गए।

इस घटना ने स्वीडेन को झकझोर दिया। काबिले तारीफ है स्वीडेन का जनतंत्र जहां एक प्रधानमंत्री पैदल संसद जाता हो और भीड़ भरे बस में चढ़ कर बाजार जाता हो... और जिसके पीछे एक भी सिपाही वर्दी में या सादे वेश में न हो, क्या इस तरह का पारदर्शी जनतंत्र कभी हमें भी मयस्सर होगा?

• • •